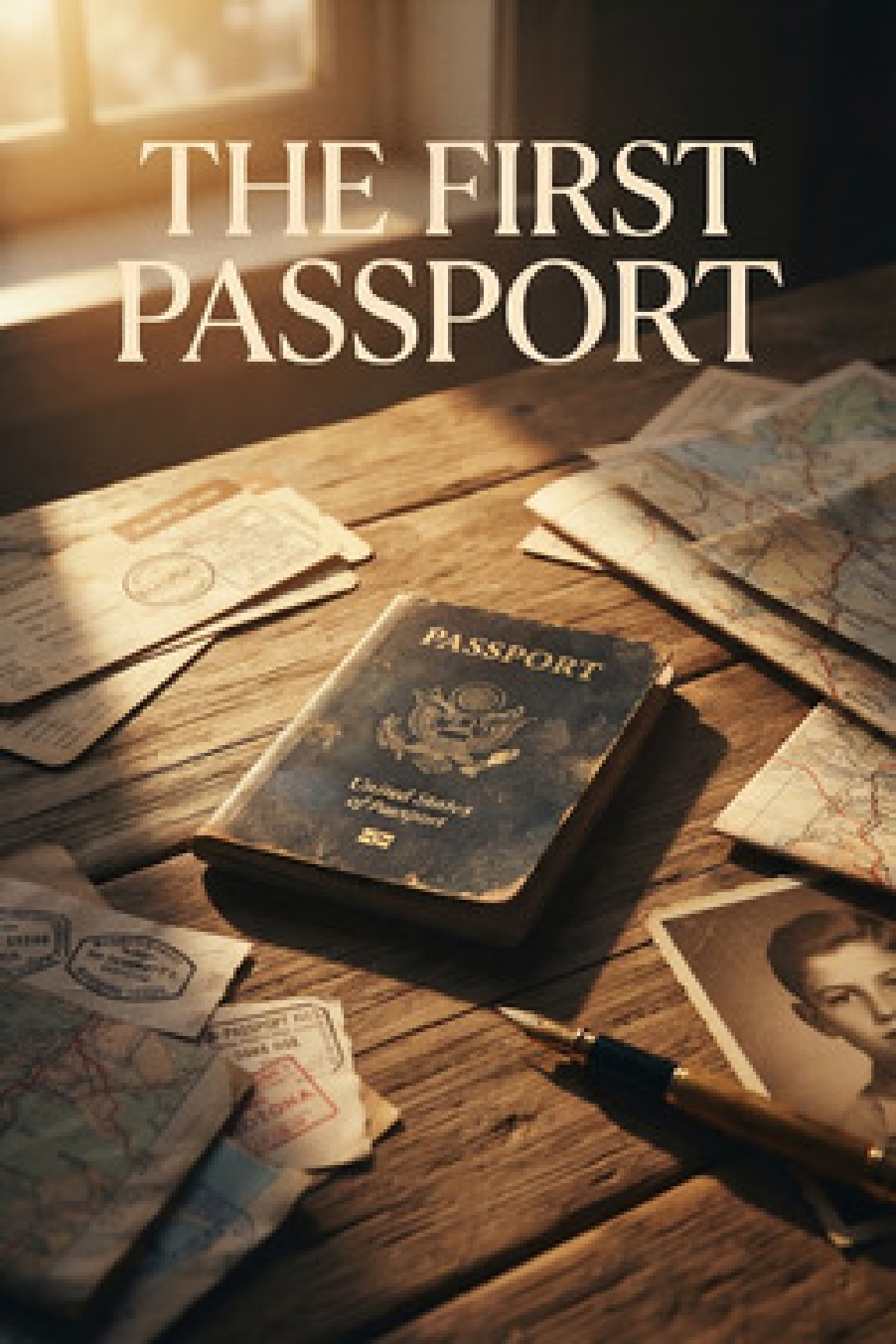

THE FIRST
PASSPORT
PASSPORT

दहलीज़ 4
पहला पासपोर्ट

कई सालों तक मैं मानता रहा कि मैं एक करियर बना रहा हूँ।

यह एक वाजिब धारणा थी।

हर सुबह मैं काम के लिए उठता था।

हर हफ़्ते के लक्ष्य होते थे।

हर महीने के नतीजे होते थे।

हर साल का एक बहीखाता होता था।

सब कुछ इस विचार की पुष्टि करता लगता था कि कहानी का केंद्र काम है।

फिर समय आया।

और समय ने, हमेशा की तरह, हर चीज़ को उसकी जगह पर रखने का ज़िम्मा उठाया।

आज, जब पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो मुझे आँकड़े उतने याद नहीं जितने लोग याद हैं।

मुझे सांख्यिकी उतनी याद नहीं जितनी बातचीतें याद हैं।

मुझे कार्यविधियाँ उतनी याद नहीं जितने फ़ैसले याद हैं।

यह एक चौंकाने वाली खोज है।

हम सारा जीवन यह मानते हुए बिता देते हैं कि मूल्य ढाँचों में है।

फिर हम पाते हैं कि मूल्य उन इंसानों में छिपा था जो उन ढाँचों से गुज़रते थे।

मैं एक ऐसी दुनिया में दाख़िल हुआ जिसके नियम सुनिश्चित थे।

साफ़ लक्ष्य।

ऊँचे मानक।

वह अनुशासन की माँग करती थी।

वह ज़िम्मेदारी माँगती थी।

वह शॉर्टकट को ज़्यादा जगह नहीं देती थी।

वह बहुत कुछ माँगने वाला माहौल था।

और वह सौभाग्य की बात थी।

क्योंकि अनुशासन आदर का एक रूप है।

सबसे पहले ख़ुद के प्रति।

हम एक ऐसे युग में जीते हैं जो लगातार प्रतिभा का जश्न मनाता है।

मैंने किसी और चीज़ का आदर करना सीखा।

दृढ़ता।

प्रतिभा एक दरवाज़ा खोल सकती है।

दृढ़ता तुम्हें गलियारे को पार करने देती है।

बहुत से मेधावी लोग ग़ायब हो जाते हैं।

वहीं बहुत से सामान्य लोग असाधारण कृतियाँ रच देते हैं।

अंतर शायद ही कभी बुद्धि होता है।

अक्सर वह निरंतरता होती है।

दिन-ब-दिन।

फ़ैसला-दर-फ़ैसला।

ज़िम्मेदारी-दर-ज़िम्मेदारी।

वहीं मैंने एक बुनियादी बात समझनी शुरू की।

एक संगठन सचमुच कभी इमारतों से नहीं बनता।

वह लोगो से नहीं बनता।

वह नारों से नहीं बनता।

वह समय के साथ दोहराए गए व्यवहारों से बनता है।

हर कंपनी की एक दृश्य संस्कृति होती है और एक अदृश्य।

पहली ब्रोशरों में दिखती है।

दूसरी तब उभरती है जब कोई नहीं देख रहा होता।

जब कोई समस्या आती है।

जब कोई ग्राहक असंतुष्ट होता है।

जब कोई नतीजा नहीं आता।

जब कोई संकट दरवाज़ा खटखटाता है।

उसी क्षण तुम पाते हो कि सचमुच क्या मायने रखता है।

सालों तक मैंने दबाव में स्त्री-पुरुषों को देखा।

कुछ पूरी तरह बदल जाते थे।

बाक़ी अपना सर्वश्रेष्ठ प्रकट करते थे।

और उन्हीं क्षणों में मैं सीखता था।

सफलताओं से नहीं।

प्रतिक्रियाओं से।

क्योंकि किसी व्यक्ति की असली पहचान शायद ही कभी आसान दिनों में उभरती है।

वह तब प्रकट होती है जब कुछ टूटता है।

जब योजना नाकाम होती है।

जब सुरक्षा ग़ायब होती है।

जब सिर्फ़ चरित्र बचता है।

मेरे जीवन के सबसे महत्वपूर्ण सबक़ों में से कई किसी कक्षा से नहीं आए।

वे किसी किताब से नहीं आए।

वे रोज़मर्रा की मुलाक़ातों से आए।

सहकर्मियों से।

ग्राहकों से।

उन लोगों से जिन्होंने शायद कभी कल्पना भी नहीं की कि वे कुछ सिखा रहे हैं।

जीवन अक्सर ऐसे ही काम करता है।

सबसे महत्वपूर्ण गुरु ख़ुद को गुरु के रूप में पेश नहीं करते।

वे बस हमारे सामने जीते हैं।

और उनका कुछ बच रहता है।

सालों के बीतने के साथ मैंने यात्राएँ शुरू कीं।

अलग-अलग राष्ट्र।

अलग-अलग संस्कृतियाँ।

अलग-अलग भाषाएँ।

शुरू में मैं भिन्नताएँ खोजता था।

यह स्वाभाविक था।

हर देश की अपनी एक शख़्सियत लगती थी।

एक लय।

एक तर्क।

एक संवेदनशीलता।

फिर कुछ हुआ।

मैंने समानताओं पर ध्यान देना शुरू किया।

अपने बच्चों के भविष्य को लेकर चिंतित एक पिता।

बलिदान देने को तैयार एक माँ।

अपना मोल दिखाने को आतुर एक नौजवान।

आदर माँगता एक मज़दूर।

सुना जाना चाहता एक बुज़ुर्ग।

निर्देशांक बदलते थे।

इंसान हैरान कर देने वाली हद तक एक जैसा रहता था।

तभी मैंने समझना शुरू किया कि कंपनी काम की जगह से कहीं ज़्यादा थी।

वह एक खिड़की थी।

वह मुझे दुनिया को देखने दे रही थी।

उन वास्तविकताओं में दाख़िल होने जिन्हें वरना मैं कभी नहीं जान पाता।

यह समझने कि भूगोल इंसानों को उनके सोचने से कहीं कम अलग करता है।

हर यात्रा कुछ जोड़ती थी।

हर मुलाक़ात एक मानसिक सरहद को खिसका देती थी।

हर अनुभव एक पूर्वाग्रह को ढहा देता था।

और बिना जाने मैं काम से भी बड़ा एक सबक़ सीख रहा था।

इंसान हर व्यवस्था से पहले आता है।

हमेशा।

रणनीतियाँ बदलती हैं।

बाज़ार बदलते हैं।

प्रौद्योगिकियाँ बदलती हैं।

पीढ़ियाँ बदलती हैं।

पर भरोसा बना रहता है।

आदर बना रहता है।

दिया हुआ वचन बना रहता है।

ये ऐसी मुद्राएँ हैं जो कभी अपना मूल्य नहीं खोतीं।

जब मैं अपने जीवन के उस दौर के बारे में सोचता हूँ, तो उसे महज़ एक पेशेवर सफ़र नहीं मानता।

मैं उसे एक मानवीय प्रशिक्षण मानता हूँ।

एक प्रयोगशाला।

एक अनौपचारिक पाठशाला जिसमें हर दिन दुनिया की समझ में एक ब्योरा जोड़ता था।

इसीलिए आज मैं मुस्कुराता हूँ जब कोई किसी करियर को भूमिकाओं की एक श्रृंखला तक सिकोड़ देता है।

भूमिकाएँ अस्थायी होती हैं।

सबक़ बने रहते हैं।

लोग बने रहते हैं।

रूपांतरण बने रहते हैं।

आख़िरकार मैं अपने साथ कोई संगठन-चार्ट नहीं ले जाता।

मैं अपने साथ कोई पद नहीं ले जाता।

मैं अपने साथ कोई उपाधि नहीं ले जाता।

मैं अपने साथ सैकड़ों चेहरे ले जाता हूँ।

हज़ारों बातचीतें।

आम लोगों से मिले सबक़ों की एक बेहिसाब मात्रा।

और सबसे बढ़कर एक निश्चितता।

कंपनी महत्वपूर्ण थी।

बहुत महत्वपूर्ण।

उसने मुझे गढ़ा।

उसने मुझे परखा।

उसने मेरे लिए ऐसे रास्ते खोले जिनकी मैंने कभी कल्पना नहीं की थी।

पर वह मंज़िल नहीं थी।

वह शुरुआत का बिंदु थी।

क्योंकि काम कौशल गढ़ता था।

दुनिया जागरूकता गढ़ती थी।

और असली कहानी, जो मेरे भीतर धीरे-धीरे आकार ले रही थी, अभी शुरू होनी बाक़ी थी।